Airo National Research Journal
Volume XIX

ISSN 2321-3914
September 2019

शिक्षक: आगामी संस्कृति के निर्माता

तुलसी राम
शोधार्थी शिक्षा, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय ,उदयपुर
डॉ. चंद्रकांत शर्मा
प्राचार्य अरावली टी टी कॉलेज, उदयपुर

सारांश

वर्तमान समय मे शिक्षक की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है आज शिक्षक केवल पुस्तकीय ज्ञान का प्रदाता न होकर पथ प्रदर्शक भी है जीवन का मार्गदर्शन करने वाला है परंतु में अब शिक्षक के पद का दायरा सीमित हो रहा है इसे केवल विद्यालयी शिक्षण तक समेट दिया गया है प्रशासकीय व्यवस्था में वह अकेले शासकीय कर्मचारी जैसा बन कर राह गया है जबकि आवश्यकता है इसे व्यापक बनाने की माना जाता है कि यदि शिक्षक नही होता तो शिक्षण की कल्पना भी नही की जा सकती थी शिक्षण की आधारशिला शिक्षक के द्वारा ही रखी जाती है प्राचीन काल से ही शिक्षक का दर्जा बहुत ही उच्च और अहम रहा है वह समाज का आदर्श होता था शिक्षक के स्वरूप में ईश्वर की तक कल्पना की गई"गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरःगुरु साक्षात पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः" श्लोक में गुरु की तुलना ब्रह्मा से की गई है जिस प्रकार ब्रह्मा को सृष्टि का रचयिता माना जाता है उसी प्रकार शिष्य के सम्पूर्ण जीवन के निर्माण की बागडोर शिक्षक के हाथों में होता है गुरु का कार्य शिष्य का जीवन निर्माण होता है,शिक्षक ज्ञान रूपी आहार देकर शिष्य को जीवन संघर्ष के योग्य बनाता है उसका चरित्र निर्माण करता है इसलिये उसकी तुलना विष्णुजी के रूप मे भी की गई ,शिष्य के दुर्गुण दूर करने के कारण उसकी बुराइयों के संहार करने के कारण शिक्षक को महेश भी कहा गया है|शिक्षक समाज के आदर्श स्थापित करने वाला व्यक्तित्व होता है किसी भी देश समाज के निर्माण में शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण यदि दूसरे शब्दों में कहे तो शिक्षक समाज का आईना होता है छात्र और शिक्षक का संबंध केवल विद्यालयी शिक्षा देने तक सीमित नही रहता वल्कि शिक्षक हर मोड़ पर एक मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वाहन करता है विद्यार्थी में सकारात्मक सोच विकसित करता है उसे सदा आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देता है और स्वयं को भी उदाहरण के तौर प्रस्तुत करता है एक सफल जीवन यापन हेतु

शिक्षक अनिवार्य प्रक्रम है संसार मे भारत ही एकमात्र ऐसा राष्ट्र है जहाँ शिष्यो को विद्यालयी ज्ञान के साथ उच्च मूल्यों को स्थापित करने वाली नैतिक व चारित्रिक शिक्षा भी प्रदान की जाती है जो छात्र के सर्वांगीण विकास में सहयोगी होती है गुरु का शाब्दिक अर्थ होता ही है अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला गु अर्थात अंधकार और रु का मतबल नष्ट करने वाला है

प्रस्तावना

भारत की भावी पीढ़ी को अनुशासित, विनम्र तथा सुयोग्य बनाने के लिए आवश्यक है कि उनमें अपने शिक्षकों के प्रति आदर एवं श्रद्धा का भाव बढ़ाया जाये। शिक्षकों तथा शिक्षार्थियों के बीच दिन-दिन बिगड़ते जा रहे सम्बन्धों में तो तत्त्व काम कर रहा है वह अश्रद्धा की भावना ही है जो विद्यार्थियों में अपने शिक्षकों के प्रति बढ़ती जा रही है। इस अश्रद्धा के जहां अनेक अन्य कारण हैं वहां कुछ अभिभावकों की भूल तथा उदासीनता भी है। यदि वे चाहें और प्रयत्न करें तो कोई कारण नहीं कि छात्रों का यह दोष दूर न हो जाए।

ऐसा नहीं कि यह सुधार केवल शिक्षकों के ही हित में होगा। इस सुधार का लाभ छात्रों तथा खुद उनके अभिभावकों को भी कम नहीं होगा। स्पष्ट है कि जो छात्र अपने अध्यापक के प्रति, जो उसका ज्ञानदाता गुरु है, भ्रष्ट तथा अविनीत होगा, वह घर में गुरुजनों के प्रति भी अनुशासित तथा विनम्र नहीं हो सकता। विनम्रता फूल में महकने वाली सुगन्ध की तरह एक माननीय गुण है वह यदि एक स्थान पर प्रगट होगा तो दूसरे स्थान पर भी ठीक उसी प्रकार प्रकट होगा जिस प्रकार फूल की सुगन्ध हर व्यक्ति के प्रति समान रूप से ही प्रगट होती रहती है। जिस छात्र में गुरुओं के प्रति आदर भावना होती है उसकी प्रतिभा आपसे आप परिष्कृत होती रहती है और वह तत्परता से ज्ञानार्जन करता जाता रहता है। श्रद्धालु छात्र शिक्षक की हर बात बड़े ध्यान से सुनता है और विश्वास पूर्वक ग्रहण किया करता है। वह अदब तथा अपना हितैषी समझकर गुरु के दिये निर्देश का आस्थापूर्वक पालन करता रहता है जिससे उसमें चारित्रिक बल का विकास होता है। जो विनम्र है, अनुशासित तथा चरित्रबल का धनी है वह संसार की कौन-सी सफलता, कौन-सी सम्पदा प्राप्त नहीं कर सकता। संसार में जो भी लोग उल्लेखनीय उन्नति करते दिखलाई देते हैं, यदि उनके विद्यार्थी जीवन का पता लगाया जाये तो कदाचित् ही कोई व्यक्ति ऐसा निकले जो अध्यापकों, शिक्षकों तथा गुरुओं के प्रति धृष्ट, अश्रद्धालु अथवा अविनीत रहा हो। संसार की सारी उन्नतियों का मूल अनुशासन तथा श्रद्धा की पवित्र भावना में निहित रहता है। अनुशासन तथा श्रद्धा शून्य व्यक्ति जीवन में कदाचित ही उन्नति कर पाते हैं अस्तु, अभिभावकों को चाहिये कि वे अपने बालकों को शिक्षकों के प्रति अधिकाधिक श्रद्धालु बनाने का प्रयत्न करें। यह प्रयत्न प्रत्यक्ष रूप से शिक्षकों के प्रति आदर बढ़ाने जैसा जरूर लगता है किन्तु परोक्ष रूप में अपने प्रति भी उसी प्रकार आदर बढ़ाने के समान है। जिस पवित्र प्रयत्न में छात्रों का हित, शिक्षकों का सम्मान और खुद अभिभावकों का आनन्द सन्निहित हो उसे न करने में बुद्धिमानी जैसी बात तो मालूम नहीं होती।

ISSN 2321-3914
September 2019

शिक्षकों के प्रति छात्रों की श्रद्धा तथा आदर भाव बढ़ाने के लिए अभिभावक क्या करें? सबसे पहले तो वे स्वयं उनके प्रति आदर भाव रखें और अवसर आने पर प्रकट भी करें। जिनमें है, उन अभिभावकों का यह भाव कि वे बच्चों की फीस देते हैं, शिक्षक का कर्त्तव्य है कि वह उन्हें पढ़ाये, क्योंकि वह संस्था का नौकर है। शिक्षक का पढ़ाना और विद्यार्थी का पढ़ना अलग-अलग दीखने पर भी एक प्रक्रिया है एक शुल्क देता है दूसरा वेतन पाता है, फिर इसमें श्रद्धा भक्ति का क्या प्रश्न उठता है। हर छात्र के पिता अथवा अभिभावक हैं और शिक्षक पढ़ाने वाला। इन दोनों का दर्जा बराबर है तब हमारे द्वारा शिक्षकों का कोई विशेष आदर किया जाये इसकी तो कोई आवश्यकता दृष्टिगोचर नहीं होती, अपने मन मस्तिष्क से निकाल देना चाहिये। ज्ञान-गुरु का दर्जा पिता से ऊंचा होता है। पिता यदि मांस पिंड के रूप में किसी जीव को जन्म देता है तो ज्ञान-गुरु उसे मनुष्य के रूप में दूसरा जन्म देता है जो पहले जन्म से महत्वपूर्ण है। शिक्षा के बिना मनुष्य, मनुष्य होकर भी पशु बना रहता है। उसमें मनुष्यता के विकास के लिये शिक्षा की आवश्यकता है। उसे जो भी देगा उसका दर्जा बहुत ऊंचा होगा। इसके लिए चाहे कोई बाहरी व्यक्ति बने चाहे स्वयं अभिभावक। किसी न किसी को शिक्षा गुरु बनाना ही होगा और जो शिक्षा गुरु होगा उसका दर्जा ऊंचा होगा ही।

अबोध अभिभावक अपने बालकों के शिक्षक को देखकर बहुत बार अभिवादन तक नहीं करते। वे समझते रहते हैं कि यह तो उस संस्था का नौकर है जिसके आधार विद्यार्थियों में मेरा भी एक लड़का है। यह दम्भ एक तो यों ही मानवता के नाते ठीक नहीं। फिर किसी शिक्षक के प्रति तो यह और भी उचित नहीं। शिक्षक के मिलने पर अभिभावक को तुरन्त अभिवादन करना चाहिए। वह भावी राष्ट्र-निर्माता होता है। बच्चों का बहुत सीमा तक भाग्य विधाता होता है निश्चय ही वह अभिवादन का अधिकारी है। यह सभ्यता तथा भारतीयता दोनों के नाते उचित एवं आवश्यक है। अच्छा तो यही है कि इसमें श्रेष्ठता भी बाधा न बने।

अभिभावकों द्वारा आदर पाकर शिक्षक की आत्मा पुलक उठती है। वह अपने पद की गरिमा अनुभव करता है जिससे उसमें उत्तरदायित्व की वृद्धि होती है। विनम्र अभिभावक के बालक की तरफ उसका प्रेम स्वाभाविक रूप से बढ़ जाता है। जिसका लाभ उसे पहुंचे बिना नहीं रहता। बच्चे के शिक्षक के आने पर उसका उठकर स्वागत करना चाहिए। वह गुरु है, राष्ट्र का गुरु है भले ही उस समय वह उन अभिभावक का गुरु न हो। अभ्यागत का स्वागत खड़े होकर ही करना चाहिए और जाते समय उसे द्वार तक पहुंचाना भारतीय संस्कृति की विशेषता है आर्य मान्यता है। जिसका पालन सभी को करना ही चाहिये। यह नियम, अभ्यर्थना सामान्य व्यक्तियों तक के लिये है फिर गुरु तो गुरु ही है। इस प्रकार अभिभावक द्वारा अपने शिक्षक का आदर होते देख छात्र स्वयं भी उनका आदर तथा अदब करने लगेगा।

ISSN 2321-3914
September 2019

अभिभावकों को चाहिए कि वे शिक्षकों की निन्दा तो कभी न करें। एक तो निन्दा पिशुनता की तरह एक दुर्व्यसन है जो किसी भी भद्र व्यक्ति के लिए अशोभनीय है फिर गुरु की निन्दा करना तो और भी बुरा है। निन्दा करने से शिक्षक का तो कुछ बिगड़ता नहीं छात्र में जरूर उनके प्रति अनादर भाव बढ़ता है। यह एक दोष है बच्चों को किसी भी दोष से सुरक्षित रखना हर अभिभावक का न केवल कर्त्तव्य ही है बल्कि धर्म है। जो विद्यार्थी अपने अभिभावक को शिक्षक की निन्दा करते देखता सुनता है वह भी निन्दा करने लगता है। जिसकी निन्दा करेगा उसके प्रति अश्रद्धालु तथा भ्रष्ट होना स्वाभाविक है जिस छात्र में ऐसा दोष आया नहीं कि विद्या सम्बन्धी उसका भविष्य अंधकार से घिरा नहीं।

यदि कोई कारण है और उसका प्रमाण भी है तो किसी हद तक आलोचना की जा सकती है सो भी स्वस्थ एवं सृजनात्मक। कटु कर्कश अथवा ध्वंसात्मक नहीं। बल्कि इससे अच्छा यह रहे कि आलोचना करने के बजाय चलकर शिक्षक के पास पहुंचा जाय और विचार विनिमय द्वारा आलोचना का कारण दूर कर लिया जाय सभी अध्यापक दूध के धोये नहीं होते वे भी आखिर मनुष्य होते हैं। उनमें भी कमी तथा दोष हो सकता है और शिकायत का मौका आ सकता है। ऐसे अवसर पर भी भद्रता से नीचे उतर कर अध्यापक को उल्टी-सीधी नहीं सुनाने लगना चाहिए और न उसके पास जाकर देशकाल का विचार किये बिना एक दम बरस ही पड़ना चाहिए। यदि कोई शिकवा करना है तो उन्हें अलग बुलाकर धीरे-धीरे भद्र शब्दों में ही करना चाहिए। इस प्रकार कि यदि वहां पर कोई छात्र मौजूद हो तो उनको उसका पता न चले अन्यथा उन पर कुप्रभाव पड़ेगा। बात यदि गम्भीर हो और आपस में न निपटती हो तो भद्रता पूर्वक उच्चाधिकारियों तक पहुंचा जा सकता है। यह सब कुछ किया जा सकता है किन्तु उनकी खुले आम निन्दा करना अथवा छात्रों के सम्मुख ही आलोचना पर टूट पड़ जाना इस प्रकार कि उसके स्वाभिमान को ठेस लगे किसी प्रकार भी उचित अथवा समीचीन नहीं। इस विषय में अभिभावकों को अधिक से अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है। जो अभिभावक शिक्षकों की निन्दा नहीं करते उनके बच्चे भी उनकी आलोचना करते नहीं पाये जाते फलस्वरूप अध्यापक की अधिकाधिक शुभ भावनाओं के अधिकारी बनते हैं।

आजकल शिक्षा शिक्षार्थी, शिक्षा संस्थाएं तथा शिक्षा पद्धति सभ्य वर्ग में वार्तालाप का विषय बनी हुई हैं। कारण स्पष्ट है आये दिन विद्यार्थियों की हड़तालें उपद्रव तथा आन्दोलन। यह चर्चायें न केवल घरों बैठकों अथवा सभा सोसाइटियों में ही होती बल्कि रेलों, बसों, पार्कों, रास्ता होटलों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भी होती रहती है। ऐसे समय अभिभावकों को संयम से काम लेना चाहिए। उन्हें खुले आम सार्वजनिक स्थानों पर अध्यापकों की आलोचना नहीं करने लगना चाहिए। उन स्थानों पर न केवल जनता ही बल्कि विद्यार्थी भी रहते हैं। शिक्षकों के विरुद्ध आलोचनापूर्ण चर्चा का उत्तर चर्चा से दिया ही जाता है। तथापि यदि शिक्षकों की कटु आलोचना बचाई जा सके तो अच्छा रहे और यदि शिक्षकों के विषय में बिना कुछ कहे न बने तो विद्यार्थी वर्ग की वर्तमान दुरावस्था का दोष उन्हें कम से कम दिया जाये और विद्यार्थी की तुलना में तो उन्हें पूर्णतः निर्दोष ही बतलाना ठीक रहेगा। इस प्रकार यदि कोई छात्र उस चर्चा को सुन भी रहे होंगे तो शिक्षकों के प्रति उनकी अश्रद्धा को प्रोत्साहन न मिलेगा। वे अधिकाधिक अपने को ही दोषी समझेंगे और लोक-लज्जा के साथ अपने हित के आत्म सुधार के लिये तत्पर हो सकते हैं।

भारत में शिक्षकों की पूजा करने की परंपरा काफी लंबी है। वैदिक काल में छात्रों को शिक्षक के घर पर ही पढ़ाया जाता था, जहां खाली समय में छात्र, शिक्षकों की सेवा करते थे। इसे "गुरुकुल" कहा जाता था, जो सैद्धांतिक रूप से निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था थी, हालांकि शिष्यों द्वारा शिक्षकों को गुरुदक्षिणा (नकदी, दया और शपद आदि के रूप में सांकेतिक शुल्क) दी जाती थी। इस गुरुकुल व्यवस्था के अंतर्गत छात्रों के चरित्र निर्माण को बेहतर तरीके से ढालने पर जोर दिया जाता था, ताकि छात्रों को बौद्धिक रूप से अधिक से अधिक सशक्त एवं मज़बूत बनाया जा सके। प्राचीन भारत में एक छात्र को उसके शिक्षक की वंशावली से पहचान लिया जाता था। इसने गुरु-शिष्य परंपरा की अवधारणा को जन्म दिया, जिसे गुरु-शिष्य संबंधों के रूप में भी पहचाना जाता है। वहीं दूसरी ओर, बाद की शताब्दियों में शिक्षक अपने शिष्यों के घरों में रहा करते थे। उदाहरणस्वरूप महाभारत में गुरु द्रोणाचार्य कौरवों के साथ उनके घर में रहते थे।आगामी शताब्दियों में आवासीय विश्वविद्यालयों का उदय हुआ, जिनको बौद्ध मठों की तर्ज पर बनाया गया था। इससे मतलब था कि शिक्षक और छात्र पूर्ण रूप से तटस्थ तरीके से मिलते थे। उत्तर पश्चिम भारत में तक्षशिला विश्वविद्यालय (वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित) दुनिया का पहला विश्वविद्यालय था। भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, ओदांतपुरी, वल्लभी, पुष्पागिरी आदि कई विश्वविद्यालय थे। मगर मध्यकालीन युग में विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा इनमें से कई विश्वविद्यालयों के विनाश से शिक्षा को बड़ा नुकसान पहुंचा।19 शताब्दी की शुरुआत में भारत में आधुनिक शिक्षा की शुरुआत के साथ ही शिक्षक फिर से आगे आए। हिन्दू Presidency_University_Kolkata_New_Logo_200years कॉलेज (1817 में स्थापित), वर्तमान में कोलकाता में प्रेसिडेंसी विश्वविद्यालय आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के रूप में उच्च शिक्षण का पहला संस्थान था। इस संस्थान ने आधुनिक शिक्षा व्यववस्था में राष्ट्रीय चर्चा की शुरुआत करने में अहम भूमिका अदा की। इस विचार को

ISSN 2321-3914
September 2019

प्रेरित करने वाले नौजवान शिक्षक हैनरी लुइस विविआन डेरोज़िओ (1809-1831), एक एंग्लो-भारतीय शिक्षक थे, जो केवल 23 वर्ष तक जीवित रहे। उन्होंने समकालीन यूरोप के तर्कसंगतता और मानवतावाद के विचार को अपने छात्रों की सोच में शामिल किया।

उन्होंने "माय नेटिव लैंड" नामक भारत की पहली देशभक्ति कविता भी लिखी। इस कविता की पंक्तियां – "इतिहास में मेरे देश की गरिमा, एक खूबसूरत प्रभामंडल पर थी, और एक ईश्वरीय शक्ति के रूप में इसको पूजा जाता था, उस धरती की श्रद्धा कहां है, उसका गौरव वर्तमान में कहां है?" हैं। डेरोज़ियो को हिन्दू कॉलेज से निकाल दिया गया था। छात्रों के अभिभावकों ने उन पर आरोप लगाया था कि वह विद्यार्थियों के मनोबल को तोड़ने का काम करते हैं। कम उम्र में ही उनका देहांत हो गया था। लेकिन उनके अनुयायी एवं छात्र जिन्हें डेरोज़ियन्स अथवा युवा बंगाल के नाम से जाना जाता था, वे समाज में एक रोशनी के रूप में उभरे। इनमें, त्रिकोणमिति तरीके से एवरेस्ट की ऊंचाई मापने वाले राधानाथ सिकदर (1813-1870), वक्ता राम गोपाल घोष और लेखक प्यारे चंद मित्रा शामिल हैं।

पश्चिमी भारत में बाल शास्त्री जांभेकर (1812-1845) सार्वजनिक जीवन के छात्रों के लिए अग्रणी शिक्षक थे। मुंबई में नवनिर्मित एल्फिस्टोन संस्थान (वर्तमान में एल्फिस्टोन कॉलेज) में गणित के इस शिक्षक के छात्रों में दादा भाई नौरोजी, वीएन मंडलिक, सोराबजी शापुरजी, डॉ. भाउ दाजी आदि शामिल हैं। ये सभी पूर्व में बॉम्बे प्रेसिडेंसी में सार्वजनिक जीवन के अग्रणी लोग थे। रुगुनाथ हरीचंदरजी के साथ जांभेकर और जुनार्दन वासूदजी ने जनवरी 1832 में साथ मिलकर बोम्बे दर्पण (बोम्बे मिरर) नामक अंग्रेजी-मराठी द्विभाषी समाचार पत्र निकाला था।

शिक्षा के बढ़ते व्यासायीकरण और प्रोफेशनलिज़्म के साथ, शिक्षा की मूल्य प्रणाली खतरे में है। जब शिक्षा को वस्तु के रूप में देखा जाता है तो शिक्षक की भूमिका केवल सेवा प्रदाता के रूप में सीमित हो जाती है। दूरस्थ और ऑनलाइन शिक्षा ने शिक्षक को केवल सामग्री प्रदाता बना दिया है। केवल प्रोफेशनल और व्यावसायिक उपलब्धियों को ही जीवन में सफलता का मानदंड नहीं माना जा सकता। न ही ये उपलब्धियां खुशहाल समाज की दिशा में देश एवं लोगों को आगे बढ़ा सकती हैं। आदर्शवाद और संवेदनशीलता की शिक्षा के क्षेत्र में अहम भूमिका है। छात्रों में इन गुणों को पैदा करने और उन्हें प्रोत्साहित करने में शिक्षक को सबसे बेहतर स्थान प्राप्त है। हम सभी अपने शिक्षकों के लिए कुछ अच्छा करने की शपथ लेते हैं। अक्सर यह हम सभी के जीवन का एक श्रेष्ठ हिस्सा होता है।

शिक्षा के बारे में कुछ विद्वानों के विचारः-

शिक्षा के बारे में कुछ महापुरूषों के विचार इस प्रकार हैं - महात्मा गाँधी के अनुसार सदाचार और निर्मल जीवन सच्ची शिक्षा का आधार है तथा जैसे सूर्य सबको एक-सा प्रकाष देता है, बादल जैसे सबके लिए समान बरसते हैं, इसी तरह

ISSN 2321-3914
September 2019

विद्या-दृष्टि सब पर बराबर होनी चाहिए। हरबर्ट स्पेंसर - शिक्षा का उद्देष्य चरित्र-निर्माण है। स्वामी विवेकानन्द - मनुष्य में जो सम्पूर्णता गुप्त रूप से विद्यमान है उसे प्रत्यक्ष करना ही शिक्षा का कार्य है तथा शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है। प्लेटो - षरीर और आत्मा में अधिक से अधिक जितने सौदंर्य और जितनी सम्पूर्णता का विकास हो सकता है उसे सम्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देष्य है।

शिक्षक एक न्यायपूर्ण राष्ट्र व विश्व के निर्माता है:-

शिक्षकों को संसार के सारे बच्चों को एक सुन्दर एवं सुरक्षित भविष्य देने के लिए व सारे विश्व में एकता एवं शांति की स्थापना के लिए बच्चों के कोमल मन-मस्तिष्क में भारतीय संस्कृति, संस्कार व सभ्यता के रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' व 'भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51' के विचार रूपी बीज बचपन से ही बोने चाहिए। हमारा मानना है कि भारतीय संस्कृति, संस्कार व सभ्यता के रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' व 'भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51' रूपी बीज बोने के बाद उसे स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण व जलवायु प्रदान कर हम प्रत्येक बालक को एक विश्व नागरिक के रूप में तैयार कर सकते है। इसके लिए प्रत्येक बालक को बचपन से ही परिवार, स्कूल तथा समाज में ऐसा वातावरण मिलना चाहिए जिसमें वह अपने हृदय में इस बात को आत्मसात् कर सके कि ईश्वर एक है, धर्म एक है तथा मानवता एक है। ईश्वर ने ही सारी सृष्टि को बनाया है। ईश्वर सारे जगत से बिना किसी भेदभाव के प्रेम करता है। अतः हमारा धर्म (कर्तव्य) भी यही है कि हम बिना किसी भेदभाव के सारी मानव जाति से प्रेम कर सारे विश्व में आध्यात्मिक साम्राज्य की स्थापना करें।

शिक्षक ही इस संसार में आध्यात्मिक साम्राज्य की स्थापना कर सकते हैं:-

ऐसे अनेक उदाहरण देखे गये हैं कि भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक गुणों से ओतप्रोत एक शिक्षक ही पूरे विद्यालय तथा समाज में बदलाव ला सकता है। श्री गोपाल कृष्ण गोखले, पं० मदन मोहन मालवीय, गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर, डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन आदि ने अकेले ही सारे समाज को बदलने की मिसालें प्रस्तुत की हैं। एक अच्छा शिक्षक लाखों के बराबर होता है। वास्तव में शिक्षक भी ऐसे होने चाहिए जो कि स्वयं इस बात का विश्वास करते हो कि ईश्वर एक है, धर्म एक है तथा मानव जाति एक है साथ ही ऐसे शिक्षक मनुष्य की तीन वास्तविकताओं भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक की संतुलित शिक्षा देने वाले भी हो। वे शिक्षक बालक को पहले उनके आन्तरिक गुणों को विकसित करके उन्हें नेक बनाये तथा फिर बाह्य गुणों को विकसित करके उन्हें चुस्त भी बनाये, बालक को धरती का प्रकाश तथा मानव जाति का गौरव बनाये। वास्तव में ऐसे ही शिक्षकों के श्रेष्ठ मार्गदर्शन द्वारा धरती पर स्वर्ग अर्थात ईश्वरीय सभ्यता की स्थापना होगी।

ISSN 2321-3914
September 2019

हमें प्रत्येक बालक को धरती का प्रकाश बनाना है:-

प्रत्येक बालक धरती का प्रकाश है किन्तु यदि उसे उद्देश्यपूर्ण अर्थात भौतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक तीनों प्रकार की संतुलित शिक्षा न मिली तो वह धरती का अन्धकार भी बन सकता है। इसलिए उद्देश्यपूर्ण शिक्षा को सबसे अधिक महत्व देना चाहिए तथा बालक के मस्तिष्क तथा हृदय को अज्ञानी अभिभावकों, टीचर्स तथा राजनैतिक, सामाजिक व धार्मिक गुरूओं की अज्ञानता से बचाना चाहिए। हमारा मानना है कि आज की शिक्षा का उद्देश्य मानव जाति को 1. ईश्वरीय अनास्था, 2. अज्ञानता, 3. संशयवृत्ति तथा 4. अन्तरिक संघर्ष से मुक्त करने के साथ ही प्रत्येक बच्चे को इस धरती का प्रकाश बनाना होना चाहिए। इसके लिए शिल्पकार एवं कुम्हार की भाँति ही स्कूलों एवं उसके शिक्षकों का यह प्रथम दायित्व एवं कर्त्तव्य है कि वह अपने यहाँ अध्ययनरत् सभी बच्चों को इस प्रकार से संवारे और सजाये कि उनके द्वारा शिक्षित किये गये सभी बच्चे 'विश्व का प्रकाश' बनकर सारे विश्व को अपनी रोशनी से प्रकाशित करें।शिक्षक तथा समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है | शिक्षक के विचार, मन:स्थिति, आचरण और व्यवहार ज्ञात एवं अज्ञात रूप से समाज को प्रभावित करते हैं | शिक्षक का चरित्र विद्यार्थी तथा समाज के लिये आचरण की पाठशाला है | कक्षा में दिए हुए वक्तव्य एवं अध्यापन से कहीं अधिक प्रभाव उनके निजी स्वभाव, प्रकृति और आचरण का विद्यार्थी प्रभाव परिलक्षित होता है | इसलिए कक्षा में पाठ्यपुस्तक पढ़ाने के साथ-साथ अध्यापक को अपने आचरण एवं व्यवहार के प्रति सतर्क होना वांछनीय है | महात्मा गाँधी आचरणहीन ज्ञान को सुगंधि में लिपटे हुए शव के समान समझते थे | वास्तव में मनुष्य की महत्ता उसके उत्तम चरित्र में है, यदि अध्यापक के हृदय में सच्चे अर्थों में अच्छे समाज के निर्माण की आकांक्षा है, तो निश्चय ही वह अपना चरित्र उन आदर्शों में व्यवस्थित करने के लिये प्रयत्नशील होगा, जिनसे वह समाज को परिवर्तित करना चाहता है | उसके हाथ में विद्यार्थी मण्डल की महान शक्ति है, जिसके माध्यम से वह समाज की पुन: रचना कर सकता है|

हुमायूँ कबीर के अनुसार "शिक्षक राष्ट्र के भाग्य निर्णायक हैं यह कथन प्रत्यक्ष रूप से सत्य प्रतीत होता है, परन्तु अब इस बात पर अधिक बल देने की आवश्यकता है कि शिक्षक ही शिक्षा के पुनर्निर्माण की महत्वपूर्ण कुँजी है | यह शिक्षक वर्ग कि योग्यता ही है, जो कि निर्णायक है |" शिक्षक को ईश्वर के समकक्ष माना जाता था | इस विषय में एस. बाल कृष्ण जोशी का कथन उल्लेखनीय है | उनके शब्दों में, "एक सच्चा शिक्षक धन के अभाव में धनी होता है, उसकी सम्पत्ति का विचार बैंक में जमा धन से नहीं किया जा सकता |" शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा-पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है | शिक्षक ही वह शक्ति है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली संततियों पर अपना प्रभाव डालती है | शिक्षक ही राष्ट्रीय तथा भौगोलिक सीमाओं को अतिक्रमित कर विश्व-व्यवस्था तथा मानव जाति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है | इस प्रकार शिक्षक का महत्व समाज तथा शिक्षा-व्यवस्था दोनों में ही स्पष्ट है | वस्तुत: शिक्षक उन भावी नागरिकों का निर्माण करता है, जिनके ऊपर राष्ट्र के उत्थान का भर है | इस

ISSN 2321-3914
September 2019

संदर्भ में सैयदेन कहते हैं – "हमें यह नहीं भूलना चाहिए शिक्षण एक उद्दात व्यवसाय है और मानव-इतिहास की महानतम तथा श्रेष्ठतम विभूतियों ने इस व्यवसाय को अपनाया था, क्योंकि सभी युगों में समस्त महान धार्मिक नेता तथा सुधारक – बुद्ध, कन्फ्यूशियस, सुकरात, मुहम्मद, गुरू नानक, कबीर साहब आदि इस शब्द के सच्चे अर्थ में मानव-जाति के शिक्षक थे |"

विद्यार्थी को पढ़ाई कराना शिक्षक का कर्तव्य होता है। टीचर अपने इस कर्तव्य का निर्वाह ईमानदारी से करता है। शिक्षक को राष्ट्र निर्माता भी कहा जाता है। श्रेस्ठ व्यवहार और नैतिकता का पाठ विद्यार्थी अपने शिक्षक से ही सीखता है। विद्यार्थी के गुणों की पहचान टीचर को ही होती है। उत्तम शिक्षक से उत्तम गुण प्राप्त होते है। आगे चलकर भविष्य में डॉक्टर, इंजीनियर इत्यादि शिक्षक ही तैयार करता है। एक गुरु, शिक्षक या अध्यापक आगे की एक पूरी पीढ़ी तैयार करते है। शिक्षक का एकमात्र लक्ष्य बच्चे के मन रूपी मंदिर में ज्ञान का दीपक जलाना होता है।यह जरूरी नही है कि शिक्षक केवल बौद्धिक विकास ही करता है। शिक्षक मनुष्य का शारीरिक विकास भी करता है। सचिन तेंदुलकर, पीटी उषा, साइना नेहवाल जैसे खेलों के बड़े नाम की सफलता के पीछे शिक्षक ही है। बिना शिक्षक के सफलता नही मिलती है। भारत ने वर्ष 2011 क्रिकेट का वर्ल्डकप जीता था। इस जीत में सारे खिलाड़ियों का योगदान था लेकिन उस वक्त के क्रिकेट कोच गैरी कर्स्टन का योगदान भी कम नही है। कार्य का कोई भी क्षेत्र हो खेल, राजनीति, फिल्म्स, बिज़नेस, इंजीनियरिंग, डॉक्टर्स या अध्यापन। इन सारे क्षेत्रों में सफलता के लिए गुरु का होना जरूरी है। बिना किसी गुरु के सफलता प्राप्त करना मुश्किल होता है।

उपसंहार

एक अच्छा शिक्षक कौन है? यह प्रश्न आपके मन में आता होगा। इसका जवाब बिल्कुल आसान है कि अच्छा शिक्षक शिक्षण के प्रति ईमानदार होता है। पूर्ण रूप से समर्पित होकर पढ़ाता है। वो अपने विद्यार्थियों में भेद नही करता है। उसके लिए सारे स्टूडेंट्स एक समान होते है। गुरु की नजर में पढ़ाई में अच्छे या बुरे सभी प्रकार के विद्यार्थी समान है। वो उन पर एकसमान ध्यान देता है और सभी विद्यार्थी शिक्षक को प्रिय होते है। एक अच्छे गुरु को धैर्यवान होना जरूरी है। शिक्षक को विद्यार्थी के मित्र की भांति होना चाहिए। एक महान गुरु ही महापुरुष का निर्माण करता है।भारत में हर वर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। शिक्षक दिवस हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म के दिन मनाया जाता है। एक अच्छे शिक्षक को डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के समान होना चाहिए। बुरा शिक्षक बुराई को जन्म देता है और अच्छा शिक्षक अच्छाई को जन्म देता है।शिक्षक का महत्व सर्वविदित है। राष्ट्र का सच्चा और वास्तविक निर्माता अध्यापक ही है क्योंकि वह अपने विद्यार्थियों को शिक्षित और विद्वान् बनाकर ज्ञान की एक ऐसी अखंड ज्योति जला देता है जो देश और समाज के अन्धकार को दूर कर ज्ञान

ISSN 2321-3914
September 2019

का प्रकाश फैलाती है। प्रत्येक देश के विद्यार्थी उस देश के भावी निर्माता होते हैं।उनका नैतिक, मानसिक और सामाजिक विकास अध्यापक पर ही निर्भर करता है। अध्यापक उस कुम्हार के सामान होता है जो शिष्य रुपी घड़े को अपने प्रयत्नों द्वारा सुन्दर और सुडौल रूप प्रदान करता है। शिक्षक ज्ञान, समृद्धि और प्रकाश का एक बड़ा स्रोत होता है जिससे कोई भी जीवनभर के लिये लाभ प्राप्त कर सकता है।

वो हरेक के जीवन में वास्तविक प्रकाश के रुप में होते हैं क्योंकि वो जीवन में उनका रास्ता बनाने के लिये विद्यार्थियों की मदद करते हैं। वो किसी व्यक्ति के जीवन में प्रभु का दिया हुआ एक उपहार होते हैं जो बिना किसी स्वार्थ के हमें सफलता की ओर उन्मुख करते हैं।वास्तव में, शिक्षा के माध्यम से हमारे राष्ट्र के चकित कर देने वाले भविष्य के निर्माता के रुप में हम उन्हें बुला सकते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो एक अच्छे व्यवहार और नैतिकता के व्यक्ति के लिये बहुत अच्छे से विद्यार्थी को शिक्षित करते हैं। वो विद्यार्थी को अकादमिक रुप से बेहतरीन बनाते हैं और जीवन में हमेशा अच्छा करने के लिये प्रोत्साहित करते हैं।वो विद्यार्थी को ज्ञान, कौशल और सकारात्मक व्यवहार से सज्जित करते हैं जिससे विद्यार्थी कभी खोया हुआ महसूस नहीं कर सकता और आगे बढ़ता है। स्पष्ट दृष्टिकोण और विचारों के माध्यम से शिक्षा के उनके लक्ष्य के बारे में वो विद्यार्थियों को हमेशा समझाते रहते हैं। बिना शिक्षक के जीवन में कोई भी मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक रुप से विकास नहीं कर सकता है। एक शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। जिस देश के शिक्षक ऊँचे आदर्श के उपासक होंगे वह देश कभी पिछड़ नहीं सकता। एक आर्दश अध्यापक के सम्मुख धन एकत्रित करने की लालसा कदापि नहीं होती। क्योंकि वह देश प्रेम के पावन उद्देश्य से इस पवित्र कार्य को करता है। वह अपनी ज्ञान-ज्योति से देश की भावी आशाओं (बच्चों) के हृदय के अज्ञानान्धकार को मिटा कर उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है।आर्दश शिक्षक विद्या-रुपी सरोवर होता है जहां से अनेक बाल रुपी पक्षी ज्ञान रुपी जल से अपनी प्यास बुझा कर अपने जीवन को सफल करते हैं। जैसे वृक्ष अपने फल से पहचाना जाता है इसी प्रकार विद्यार्थी भी अपने गुणों से पहचाना जाता है। विद्यार्थी गुरु का ही तो प्रतीक होगा है।

अपने शिष्यों को विद्या में निपुण करने के लिए परम धैर्य का प्रयोग में लाना ही एक आर्दश अध्यापक का सर्वश्रेष्ठ गुण है। आदर्श अध्यापक यदि किसी भी बच्चे को कृपथ पर अग्रसर होता देखता है। तो उसल सुमार्ग पर लाने का भरसक प्रयत्न करता है । वह जानता है कि समय कितना मूल्यवान है इस लिए वह सदैव समय का सदुपयोग करता है और प्रतिपल बच्चों की भलाई के विषय में सोचता है तथा वह शिष्य की उन्नति को देख कर फूला नहीं समाता। आदर् अध्यापक डण्डे के बल पर कभी भी शिष्यों पर अपना सिक्का नहीं बिठाता । वह प्रेम से उन पर शासन करता है। बच्चों को सदैव प्रफुल्ल और महान देखना चाहता है।

ISSN 2321-3914
September 2019

संदर्भ

1. अदावाल (1952), एन इन्वेस्टिगेषन इन टू दि क्वालिटीज ऑफ टीचर अंडरट्रेनिंग, थीसिज इन एजूकेषन

2. अलेक्जैंडर विलियम एम (1959), आरयूए गुड टीचर?, होल्ड राइनहार्ट एंड विष्टोन, न्यूयार्क।

3. अजीत सिंह एवं अनिल कुमार (1996) : परसैप्षन ऑफ टीचर, प्राथ0 षिक्षक वाल्यूम 21

4. अग्रवाल जे.सी (1966), एजूकेषनल रिसर्च एन इंट्रोडक्षन, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।

5. बाथ जोहर (1996), दि स्टोरी ऑफ ए स्कूल टीचर : हार्स मैग्जीन

6. बार्बर मिषेल एंड फिलिप्स विकी (2000), शुड लार्ज स्कूल एसेसमेंट वी यूज्ड फॉर एकाउंटबिलिटी? दि जर्नल ऑफ एजूकेशनल चेंज, वाल्यूम–1 नं.3 सितम्बर।

7. बेस्ट जॉन डब्ल्यू (1989), रिसर्च इन एजूकेशनः प्रिंटिस हॉल इंडिया प्रा.लि. नई दिल्ली।

9. ब्लाइंग डोनाल्ड (1982), एकाउंटिबिलिटी ऑफ फ्रीडम फौर टीचर्स, दि सोसाईटी फॉर रिसर्च इन हायर एजूकेशन एंड यूनिवर्सिटी ऑफ गोलफोर्ड।

10. बघेला पुष्पा (1991), ‘‘शिक्षण व्यवसाय के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण का अध्ययन’’, शोध–अजमेर विश्वविद्यालय।,

ISSN 2321-3914
September 2019

11. सी.वी. गुड (1973), डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन, मैग्रा हिलवुक कं., यू.एस.एत्र।

12. चतुर्वेदी विराट विष्णु (1988), शिक्षक की जबावदेही, साहित्य परिचण, 16 सामयिक विशेषांक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

13. चंद्रा एन.डी. (1994), ट्रांसपैरेंसी एंड एकाउंटिबिलिटी इन हायर एजूकेशन, टीचर एजू. एट एलीमेंट्री स्टेज, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा. लि. देहली।

14. दवे आर.एच. (1998), काम्पीटेंसी वेस्ड एंड कमिटमेंट ओरियंटेड टीचर फॉर क्वालिटी स्कूल एजूकेशन, इनीसिएशन डॉक्यूमेंट एनसीटीई, न्यू देहली।

15. देसाई डी (2003), प्रोफेशनल ग्रोथ ऑफ टीचर्स, पर्सपैक्टिव इन एजूकेशन (21) सोसायटी फॉर एजूकेशनल रिसर्च एंड डवलपमेंट।

*****